आधुनिकता,उत्तर आधुनिकता एवं भूमंडलीकरण के बदलते परिदृश्य

जगपाल सिंह यादव,

ज्वालामुखी मंदिर के पास
रानीगंज मोहल्ला पन्ना–जिला,पन्ना (म.प्र.)

बाजारवाद वर्तमान में साम्राज्यवाद का नया अवतार माना जाता है, इसी साम्राज्यवाद की जड़ों को मजबूत बनाने के लिए बाजार बनाये जा रहे हैं। साम्राज्यवाद, पूंजीवाद, बाजारवाद उपविवेशवाद सब एक ही वृक्ष की विविध शाखाएँ हैं। आज विश्व में बाजार रूपी सौदागरों की एक पूरी जमात उग आई है जिसने भारत जैसे विकासशील देशों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। इसी बाजारवाद की उपज है विषमता, अवसाद, नशा, बीमारी, बेकारी, कृत्रिम, आनन्द और उल्लास। जहाँ एक ओर गांवों में पीने के लिए पानी उपलब्ध नहीं है वहीं दूसरी ओर यह बाजार नशे का साजो सामान आसानी से उपलब्ध करा रहे हैं।

प्रत्येक युग परिवर्तित चिंतन और नूतन जीवन मूल्यों का प्रतिनिधि होता है। मानवीय सभ्यता के उद्भव एवं विकास से लेकर वर्तमान युग तक अनेक चिंतन सूत्र सधन रूप से देखे जा सकते हैं, जिन्होंने समय–समय पर जन–मानस और युग चेतना को मथा है। आधुनिक युग खासकर सन् 1960 ई0 के बाद की पूरी परिस्थिति और उससे आविर्भूत मानवीय नियति, को जो एक नाम दिया गया है वह है उत्तर आधुनिकता। उत्तर आधुनिकता एवं आधुनिकता के बीच कोई बड़ी विभाजक रेखा नहीं है। उत्तर आधुनिकता को चूँकि आधुनिकता का उत्कर्ष या अवसान माना जाता है अनुमान लगाना कठिन है अतः आधुनिकता के बिना हम उसकी कल्पना नहीं कर सकते। आधुनिकता ने हमारे जीवन को भौतिकता के साथ अनेक अन्त विरोधों से भर दिया है। पिछले दस वर्षों में संचार क्रांति की अभूतपूर्व सफलता ने विश्व को ग्लोबल युग में पहुँचा दिया है। इंटरनेट और कम्प्यूटर ने दुनिया की सीमाओं को मिटा दिया है। किन्तु यह सब कुछ भारतीय "वसुधैव कटुम्बकम्" की अवधारणा से सर्वथा अलग है आज जीवन के हर क्षेत्र में यंत्रों का प्रयोग इस सीमा तक बढ़ गया है कि मनुष्य धीरे–धीरे स्वयं यंत्र बनता जा रहा है। यह पूँजीवादी उपभोक्ता संस्कृति का चरम युग है। सुधीश पचौरी के अनुसार– "इन सैंतालित अड़तालिस वर्षों में हम आधुनिक से उत्तर आधुनिक हुए हैं, न यह उत्थान है, न पतन, न यह उन्नति हैं, न अवनति,"[1] वास्तव में यह पूँजीवाद का नया चरण है जो समूचे विश्व में विद्यमान है।

इस उत्तर आधुनिकता की कोई समग्रतावादी या सकलतावादी परिभाषा सम्भव नही फिर भी यह स्पष्ट है कि "उत्तर आधुनिकता पूँजी के नये खेल, शैलियों के तेज चक्र, फैशन के पल–पल परिवर्तित रूप, विज्ञापन की ताकत, इलेक्ट्रानिक मीडिया की शक्ति, भूमण्डलीय, स्तरीकरण एवं नव उपनिवेशवाद का नाम है।"[2] इस प्रकार समस्त अन्तर्विरोधों से व्याप्त उत्तर आधुनिकता ने सत्तर के दशक में साहित्यिक परिदृश्य में प्रवेश किया। "भारतीय परिप्रेक्ष्य में उत्तर आधुनिकता मीडिया संचालित तथा बाजार निर्देशित तथ्यों की प्रतिक्रिया स्वरूप अस्तित्व में आयी। यह साठ के दशक की आधुनिकता के प्रति एक प्रतिक्रिया स्वरूप प्रकट हुयी है। यह एक जीवन शैली और जीवन दृष्टिकोण से जुड़ी

हुयी थी। जो पश्चिमी देशों में बहुत आम है और शनैः–शनैः पूर्वी देशों में भी आम होती जा रही है।"[3]

माना कि आज हमारे चारों तरफ जिन अराजक स्थितियों का साम्राज्य है उससे हम अनिश्चितता के दौर से गुजर रहे हैं परन्तु हमारे सामने जो भी स्थितियाँ है वह हमारा यथार्थ है। हम इनसे मुह नही मोड़ सकते। उनका सामना करना हमारा नैतिक दायित्व है। यही नही जीवन रूपी इस कीचड़ से मानवीय संवेदना रूपी कमल लाना ही साहित्यकार का लक्ष्य होना चाहिए। इस सन्दर्भ में गजानन माधव मुक्तिबोध की दो पांक्तियाँ दृष्टव्य है–

"जिन्दगी के कीचड़ में धंसकर

मुझे लाना है तोड़कर कमल का फूल।"

इस संदर्भ में सबसे आशावादी स्वर डा0 रामविलास शर्मा जी का है। वे कहते हैं कि "हम अपनी संस्कृति को ध्यान में रखते हुए अपने ढंग का लोकतांत्रिक समाजवाद यहाँ बनायेगे।"[4]

उत्तर आधुनिक युग में जहाँ नैतिकता का ह्रास होते हुए दिख रहा है वही कुछ लाभ भी हो रहे हैं। जिनकी अनदेखी नहीं की जा सकती और जीवन तथा जगत् का कोई भी कार्य कीमत चुकाए बगैर पूरा नही होता। जहाँ अनेक समस्याओं का जन्म हुआ है, वही पश्चिम के एकाधिकार को भी चुनौती मिल रही है। साथ ही वर्गवादी और सामन्तशाही व्यवस्था को भी खारिज कर दिया गया है। जिससे हर वर्ग का व्यक्ति वैश्विक मानव के रूप में अपनी स्वतन्त्र आस्मिता को स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। दलित, पिछड़े वर्ग, नारी और उपेक्षित लोगों को केन्द्र में लाने का उत्तर आधुनिक प्रयास प्रशंसनीय है "समस्त विरोधाभासों को सहते हुए समस्याओं को व्यापक परिदृश्य में प्रस्तुत करने का कार्य उत्तर आधुनिक साहित्य में ही संभव है। अतीत के साथ वर्तमान की संगति बैठाकर भविष्य के लिये मार्ग सुगम करने की क्षमता उसमें दिखायी देती है।"[5]

भूमंडलीकरण के प्रति युवकों का गलत दृष्टिकोण उन्हें दिशाहीनता की ओर ले जाता है जिससे उनकी जीवन की दिशा ही बदल जाती है। जो बदलते समय की भाव–मुद्राएँ संक्रमण काल के अन्त और परिवर्तन के एक तेज दौर के पूरा होने का आभास भले दे रही होगीं लेकिन भविष्य की दिशा निर्धारित करने का संकेत नहीं देती। भूमंडलीकरण के मायाजाल में फंसकर युवा वर्ग अपने आपको विकास के स्थान पर पतन की ओर ले जा रहे हैं। युवा वर्ग अपने वैयक्तिक सुख के कारण बच्चे के सुनहरे भविष्य को भी दाँव पर लगा रहे हैं। उन्हें समय की गति के कारण केवल अपने शारीरिक सुख की चाह है इसके लिए वे नये व्याय फ्रैंड तथा गर्ल फ्रैंड बनाने के ही धुन में रहते हैं और अंततः जब व्यक्ति की आँखें खुलती हैं तो वह भारतीय संस्कृति की उदारता में अपने जीवन को नवीन दिशा देने का प्रयास करता है। इस उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए लेखक ने यह बताना चाहा है कि युवा पीढ़ी की ऐसी मनोस्थिति के कारण ही परिवार विघटन के कगार पर खड़ा है। इस पारिवारिक विघटन के मुख्य कारण हैं –वैयक्तिक स्वातंत्र्य का अनुचित प्रयोग, माता–पिता के प्रति विद्रोह की भावना, प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों का परित्याग, अविवाहित माताओं के प्रति परिवार का दायित्व।

भूमंडलीकरण के आ जाने से अब तो ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है कि युवा पीढ़ी जैसे ही आंख खोलती है साथ ही बंधन मुक्त होने की चाह उनमें सिर मारने लगती है। वास्तव में भूमंडलीकरण ने तो हमें वैयक्तिक स्वतंत्रता दी थी सोचने की। अपने विचार प्रकट करने की, अपनी पुरानी परम्पराओं का परिमार्जन करने की, नये प्रयोग करने की पर युवा पीढ़ी ने इस स्वातंत्र्य के आकर्षण को जिस दृष्टि से अपनाया उसमें सबसे पहले परिवार का परित्याग किया और बिना सोचे

समझे काम के थपेड़े में बहकर अपने भविष्य को ही डुबो दिया है। यही होता है नई उम्र के अन्य युवाओं के साथ इस चाह में उनके पैर टिकते ही नहीं और वह अपने स्वर्णिम भविष्य को अपने हाथों एक ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर देते हैं कि जहाँ पहुँच कर उन्हें आगे अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देता है।

भूमंडलीकरण की इस प्रक्रिया में युवा पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के सम्मुख आक्रोश का दामन थामे हुए है। कहीं वे बड़ों से विद्रोह करते हैं तो कहीं संस्था के विरोध में खड़े हो जाते हैं। भूमंडलीकरण अन्तर्राष्ट्रीयकरण के कारण आये परिवर्तनों ने युवा पीढ़ी के हाथ में विद्रोह का ध्वज दे दिया है जिसमें परिवार का संतुलन बिखर गया है। युवा पीढ़ी के इस व्यवहार को देखकर चिंता होना लाजमी है, ''इस रोग का प्रवेश हो चुका है। एक संक्रामक रोग जिसका इलाज इस माहौल में उपलब्ध नहीं है। पारिवारिक बंधनों की डोर कमजोर पड़ती जा रही है। युवा पीढ़ी अनुशासन को सजा मानने लगी है यह पीढ़ी क्योंकि मुक्त होकर अपने मन की करने की उम्र तय कर चुकी है। अब माता–पिता किसी तरह का दबाव नहीं डाल सकते हैं अपनी संतानों पर।'' नयी पीढ़ी के पास यह विद्रोह एक अस्त्र के समान है जिसका प्रयोग करके वे मनचाही राह पर चल सकते हैं क्योंकि भूमंडलीकरण की हामी भरने वाली सरकारें इस युवा पीढ़ी को बेरोजगारी का भत्ता देकर और प्रोत्साहित कर रही हैं। प्रवासी भारतीयों की संतानों के विषय में स्थिति बिल्कुल सही है, ''परस्पर निर्भरता के बंधन को भी तोड़ने का सम्बल पाती जा रही है ब्रिटेन में जन्मीं भारतीय संतानें। सम्बल सरकार का। 18 वर्ष की आयु तक पहुँचते वे विद्रोह के ध्वज को शान के साथ फहराते खड़े हो जाएंगे पुरानी पीढ़ी के सामने। आमना–सामना होगा तो हो, तब यह डर नहीं हुआ होगा कि परिवार से अलग हो जाएंगे तो क्या करेंगे, कहाँ रहेंगे। यदि कमाई का कोई साधन नहीं होगा तो भत्ता मिलेगा सरकार से–जनकल्याणकारी सरकार से।'' इस तरह बड़े स्पष्ट शब्दों में यह बताना जरुरी है कि किस प्रकार यह युवा पीढ़ी सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं का दुष्प्रयोग कर रही है क्योंकि जब मन विद्रोही हो जाए तो फिर कौन बड़ा कौन छोटा। उस समय किसी के मान–सम्मान की कोई परवाह नहीं रहती। युवा अपने कर्तव्यों का तो ये पालन नहीं कर पाते पर दूसरों को उनके कर्तव्यों को याद करवाते हैं। उन्हें वही ठीक लगता है जो उनके और साथियों के बीच चलता है और इसी को वे अपनी उपलब्धि भी मानने लगते हैं।

युवा पीढ़ी की भौड़ी सोच का आज आवारागर्दी दोनों के जीवन का अंग बन चुकी थी। इसलिए दोस्तों के साथ हँसी–ठठ्ठा, सिनेमा, सिगरेट फूँकने, डिस्को क्लबों में जाने और लड़कियों के साथ मिलने जुलने का क्रम जोरों पर है। जब जवान लड़के–लड़कियाँ इकट्ठा होते तो हर कोई अपने माँ–बाप का मजाक उड़ाता और अपनी संस्कृति को सही ठहराता। दोनों पीढ़ियों के बीच दरार लगातार चौड़ी होती जा रही है। पुरानी परम्पराओं के प्रति विद्रोह। माता–पिता की आशाओं की पूर्ण उपेक्षा और तिरस्कार। विवाह पूर्व संबंधों से जन्मीं सन्तान जब पहली किलकारी मारती है तो उस समय उसके रोने में ही विद्रोह का स्वर मुखरित होता है। इन बच्चों का विद्रोह तो देश की उस व्यवस्था के प्रति है जिसके कारणउन्हें अपने माता–पिता के स्नेह से वंचित होना पड़ा है। उनके भीतर असुरक्षा का भाव इस प्रकार पनप रहा है कि उनकी हर क्रिया में विद्रोह झलकता है। इस उपन्यास में परमवीर संजीव तथा जस्सी की अविवाहित संतान है। संजीव और जस्सी अलग हो चुके हैं। परमवीर, जस्सी के पास रहता है। जैसे–जैसे वह बड़ा हो रहा है उसका विद्रोही स्वभाव उसके प्रत्येक कार्य में झलकता है। लेखक के शब्दों में, ''स्कूल में विद्रोही स्वभाव मुखरित हुआ परमवीर में। दूसरे बच्चों के साथ आए दिन

लड़ाई–झगड़ा होता। स्कूल के अध्यापक समझाते तो वह और उखड़ता। अब तो वह मां के साथ भी उलझ जाता।'' भारत में जिस उम्र में बच्चे अभी मां–बाप की उंगली पकड़ कर चलना सीखते हैं विदेशों में उस उम्र में ऐसे बच्चे तो संगीन अपराध भी कर देते हैं। कारण उनमें हीन भावना इस हद तक भर जाती है कि वे इसके लिए किसी को भी क्षमा नहीं करते हैं। लेखक ने भारतीय संस्कारों में पले–बड़े प्रवासी माता–पिता की संतान के विद्रोह का भी सजीव व.र्ान इन शब्दों में किया है, ''कुछ मामलों में दोनों अपने माता–पिता से भिड़ जाते। कुछ भी करने की आजादी को अपना अध्किार मानते और माँ–बाप के प्रति कर्त्तव्य की शिक्षा को सदैव नकारते।

अतः भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में एक बड़े परिवार की कल्पना तो मानव ने कर ली और इसके लिए घटक तत्वों का भी निर्माण भी कर लिया पर युवा पीढ़ी ने मनमानी करके इसे जो रूप दिया है उसी की मुँह बोलती तस्वीर है यह उपन्यास 'दिशाएं बदल गईं'। भूमंडलीकरण की लहर यदि इसी प्रकार चलती रही तो आगामी चार दशकों के पश्चात् इन अविवाहित माताओं से पैदा हुई संतान के सम्मुख वैयक्तिक स्वातंत्र्य तथा सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति विद्रोह का स्वर उठाने की जद्दोजहद् नहीं होगी क्योंकि ये विशेषताएं तो उन्हें विरासत में उपहार स्वरूप मिल रही हैं। अविवाहित माता–पिता जब अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए भटक रहे हैं तो संतान पर कैसा अंकुश। तब तो लगता है जैसे विक्षिप्त मानसिकता का बोलवाला होगा और सरकारों के सम्मुख फिर से परिवार के अस्तित्व के लिए विवाह को मान्यता देने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं होगा।

वर्तमान में आधुनिकता,उत्तर आधुनिकता एवं भूमंडलीकरण के कारण वैयक्तिक स्वातंत्र्य के भाव ने आज युवक–युवतियों के मन में यह भाव भर दिया है कि जब तक वे पारिवारिक परम्पराओं का परित्याग नहीं करते तब तक वे स्वच्छन्द मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकते। वे ऐसे वातावरण के इच्छुक हैं जहाँ उनकी इच्छा पूर्ति में किसी प्रकार की कोई बाधा न हो। जब कभी माँ–बाप अपने 15 या 16 साल के बच्चों को रोकने का प्रयास भी करते हैं तो संतान का उत्तर होता है, ''हमारी उम्र में सभी लड़के–लड़कियाँ बाहर घूमते हैं मौजमस्ती करते हैं। हमें क्यों रोका जाता है। हम भी एन्जौय करना चाहते हैं।'' इस वैयक्तिक स्वतंत्रता ने मनुष्य को बहुत स्वार्थी बना दिया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. उत्तर आधुनिकता प्रस्थान बिन्दु–सुधीश, पचौरी– पृ0 57
2. कृतिका–जनवरी–जून 2010 ,सं0 डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव– पृ0 122–123
3. उत्तर आधुनिकता और मनोहर श्याम जोशी–डॉ0 मीना खरात–पृ0–76
4. मेरे साक्षात्कार –राम विलास शर्मा
5. उत्तर आधुनिकता और मनोहर श्याम जोशी– डॉ0 मीना खरात–पृ0 77

अन्य सन्दर्भ

- साठोतर हिन्दी काव्य में राजनीतिक चेतना डॉ. एस. गम्भीर
- हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा –रामदरश मिश्र
- साहित्य और राजनीति – डॉ. कुंवर पाल सिंह
- स्वातन्त्र्योत्तर उपन्यासों में पुरूष पात्र– डॉ. दुर्गेश नन्दिनी प्रसाद
- मेरी प्रिय कहानियाँ–मन्नू भण्डारी
- उर्फ सैम–मृदुला गर्ग

- साठोत्तरी हिन्दी कहानी : मूल्यों की तलाश–डॉ0 वासुदेव शर्मा
- साठोत्तरी कहानी में मानवीय मूल्य –विनीता अरोरा
- साठोत्तरी कहानी में मानवीय मूल्य –विनीता अरोरा
- सुबह का डर 'दलदल'– डॉ0 किरण बाला
- हिन्दी कहानी : एक अन्तर्यात्रा – डॉ0 वेद प्रकाश अमिताभ

Copyright © 2017, Jagpal Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.